नित्यानन्द तत्व

तो आज के इस अति पावन अवसर पर, आप सब, 'would be Mañjarīs' का हार्दिक स्वागत है।

जो नित्यानन्द प्रभु हैं..., महाप्रभु तो छन्द हैं ही हैं, नित्यानन्द प्रभु उनसे भी ज़्यादा छन्द हैं। उन्हें और भी कम लोग जानते हैं। परन्तु, कृपा की अगर कोई आखिरी सीमा है, तो वो क्या है? नित्यानन्द प्रभु। कृपा की अंतिम परिणति को नित्यानन्द प्रभु कहते हैं।

हम सब लोग बहुत ही सौभाग्यशाली हैं, जो नित्यानन्द परिवार से जुड़ रहे हैं, और आज इस भव्य, दिव्य नित्यानन्द त्रयोदशी के उपलक्ष्य में हम यहाँ एक साथ उपस्थित हैं, और यहाँ पर आज हमनें दर्शन किए, आरती में participate किया... बहुत ही, बहुत हम fortunate हैं।

नित्यानन्द त्रयोदशी तो आज है, पर इसकी तैयारी एक दिन पहले से ही..., माघ मास के शुक्ल द्वादशी से शुरु हो जाती है। आज त्रयोदशी है, कल द्वादशी थी।

तो नित्यानन्द प्रभु की माता पद्मावती, नित्यानन्द प्रभु के पिता हड़ाई पंडित को निवेदन करती हैं, कि द्वादशी के दिन सांयकाल, शाम को जाकर वे निमंत्रण देकर आते हैं, श्रीगौरांग महाप्रभु को भक्तों के साथ, परिकर वृन्द के साथ अगले दिन नित्यानन्द प्रभु के घर पर आने के लिए, उनके जन्म उत्सव में participate करने के लिए। सब भक्तवृन्दों को और महाप्रभु को पद्मावती के अनुरोध पर हड़ाई पंडित बुला कर लाते हैं।

तो जो आज हमनें दर्शन किए, यह दोपहर के समय होता है यह, समझ लीजिए around..., around १२ के आस पास। तो..., परन्तु भक्त जो हैं, वे आते हैं, लगभग... समझिए..., around ८:३०, ९ बजे। महाप्रभु सुबह ८:३०-९ बजे नित्यानन्द प्रभु के घर पर आते हैं।

इससे पहले क्या करते हैं? इससे पहले नित्य लीलावत् सब कुछ होता है। सुबह-सुबह हम लोग क्या करते हैं? कहाँ पर होते हैं हम सब लोग? देखिए, यह निताई-गौर सुन्दर का युग है। अन्य युगों में अगर जीव भक्ति करता था भगवान की, तो उसे एक स्वरूप मिलता था। किसका? कृष्णदास का। परन्तु यह महाप्रभु का महावदान्याय युग है। इसमें कृपा बरस रही है। इस कृपा की सबसे पहली बात यह होती है कि हमें एक नहीं, दो स्वरूप मिलते हैं। अगर हम सत् परम्परा से जुड़ते हैं, तो हमें दो स्वरूप मिल सकते हैं, और अगर हम सत् साधना करेंगे, तो एक ही साथ मंजरी स्वरूप में वृन्दावन धाम में

और दूसरा किशोर ब्राह्मण के रूप में नवद्वीप में रहेंगे। तो यह नित्य लीला है..., जैसे राधाकृष्ण की नित्य लीला होती है, वैसे ही महाप्रभु की नित्य लीला नवद्वीप में होती है। तो हमारा, एक साथ हम दोनों जगह पर रहते हैं।

तो हम रात को कहाँ पर होते हैं सब लोग? हम मतलब would be हम कह लीजिए। तो हम लोग कहाँ होते हैं साधकगण? महाप्रभु के साथ श्रीवास आंगन में। तो महाप्रभु शयन कर रहे हैं, पास में हम भी शयन कर रहे होते हैं, कहाँ पर? अपने गुरुदेव के चरणों के एकदम सान्निध्य में, हम लोग शयन कर रहे होते हैं। फिर अभ्यासवश हम कैसे उठते हैं? गौरा-गौरा..., ऐसे करते हुए, गौर-गौर उच्चारण करते हुए सुबह उठते हैं, और सुबह उठते ही हम अपना आचमन इत्यादि करके, गुरुदेव के चरण सम्वाहन करते हैं। चरण सम्वाहन करके फिर हम उठते हैं, और..., यह काफी लम्बी लीला है, मैं थोड़ा सा इसलिए बता रहा हूँ अभी, क्योंकि आज नित्यानन्द त्रयोदशी..., त्रयोदशी सुबह से बता रहा हूँ कैसे होता है।

तो सुबह सब श्रीवास आंगन में हैं। तो साधकगण उठे और धीरे-धीरे करके सब भक्तवृन्द इकट्ठे हुए महाप्रभु के शयन घर के बाहर, जहाँ महाप्रभु शयन करते हैं। किसलिए इकट्ठे होते हैं? शयन शोभा दर्शन करने। जब हम सोते हैं तो ऐसा लगता है लाश सोई हुई है। परन्तु महाप्रभु सोते हैं, वे उतने ही खूबसूरत लगते हैं, जितने वे जागृत अवस्था में लगते हैं।

तो शयन शोभा का दर्शन करने के लिए सब भक्तवृन्द, निताई, अद्वैत, गुरुवर्ग, सब षड् गोस्वामी इकट्ठे हो जाते हैं। रोज़ सुबह शयन शोभा दर्शन करने के लिए। सुबह ३:३० से ४:३० बजे के बीच में यही क्रम होता है।

फिर धीरे-धीरे करके महाप्रभु उठते हैं, अनेक भक्तवृन्द हैं, तोते होते हैं, वे उठाते हैं, "हे शचीनन्दन ! हे नदिया विहारी ! आप उठिए, सब भक्त उठ चुके हैं। श्री निताईसुन्दर, अद्वैताचार्य, सब आपके शयन घर के बाहर आपके दर्शन के लिए व्याकुल हैं।"

इस प्राकर से गौर सुन्दर उठते हैं। फिर, धीरे-धीरे करके बाहर आते हैं, बराम्दे में बैठते हैं, तो साधकगण ने पहले से ही तीन आसन लगाए होते हैं। किनके लिए? श्रीगौर सुन्दर, श्रीनिताई सुन्दर और श्रीअद्वैताचार्य जी के लिए। आते हैं, फिर इसके बाद आचमन करवाया जाता है महाप्रभु को और तिलक लगाया जाता है। कौन सा तिलक?

यह वाला तिलक। यह तिलक लगाया जाता है। हम नित्यानन्द परिवार के हैं, तो महाप्रभु को कौन सा तिलक लगाया जाएगा? यह तिलक लगाया जाएगा।

अलग-अलग परिवारों का अलग-अलग तिलक होता है। रोज़ सुबह तिलक लगाया जाता है, कब? जब सिंहासन पर महाप्रभु विराजमान होते हैं।

तो सोचिए- तिलक कितना महत्वपूर्ण अंग है भक्ति का। अपना तिलक मालूम होना कितना ज़रुरी है। यही साधना करेंगे, तो यही सिद्धि में मिलेगा।

तिलक का होना, परम्परा का होना, हम सब अपनी गुरु परम्परा, गुरु वर्ग के साथ खड़े होते हैं, महाप्रभु के शयन शोभा दर्शन करने के लिए। यह सुबह होते होते..., उसके बाद महाप्रभु..., फिर लीला कीर्तन होता है, उस समय जो राधा-कृष्ण की लीला हो रही होती है। स्वरूप दामोदर कीर्तन करते हैं।

फिर ऐसे होते-होते लगभग ५:३० के करीब, सुबह महाप्रभु अपने निताई सुन्दर और श्री अद्वैताचार्य को गले लगा कर उनको निवेदन करते हैं, कि थोड़ी देर पश्चात् प्रातः लीला में फिर से मिलन होगा। थोड़ी देर के लिए फिर अपने घर जाते हैं विश्राम करने।

तो हम लोग अपने गुरुदेव के पीछे और गुरुदेव अपने गुरुदेव के पीछे और वे अपने गुरुदेव के पीछे, मतलब पूरी गुरु परम्परा एक साथ षड् गोस्वामी के साथ महाप्रभु के पीछे जाती है उनके घर तक, उनकी सेवा करने के लिए।

फिर हम महाप्रभु के घर जाते हैं, महाप्रभु के चरणों को हम लोग साफ़ करते हैं अपनी चादर से, गुरुदेव के इशारे पर। और फिर महाप्रभु शयन करते हैं और फिर हम भी अपने गुरु के मूल में शयन कर देते हैं।

फिर सुबह हम लोग उठते हैं। थोड़ी देर के बाद फिर से उठ जाते हैं, थकान नहीं होती, चिन्मय शरीर है। हम सोचेंगे कैसे उठ सकते हैं इतनी जल्दी? नहीं..., क्योंकि चिन्मय शरीर है। तो आत्मा हमेशा non-stop work करे, तब भी थकेगी नहीं। जब हम सो भी रहे होते हैं, तो शरीर सो रहा होता है, हम तो जाग ही रहे होते हैं। स्वप्न में हम कार्य कर रहे होते हैं। आत्मा कभी थकती नहीं है। सच्चिदानन्द कुछ भी कभी थकता नहीं है।

तो सुबह उठते हैं हम और आचमन इत्यादि करने के बाद, गुरु के चरण सम्वाहन् करते हैं गुरुदेव के, हमारे सनातन गुरु के, जो हमें मंत्र प्रदान करते हैं। और फिर चरण

सम्वाहन् करके हम गुरुदेव के साथ उनका गम्छा इत्यादि लेकर गंगा के तट पर जाते हैं। गंगा के तट पर स्नान करते हैं, फिर स्तव और स्तुति करते हैं गंगा माता की, और फिर उसके बाद एक साथ बैठ कर तिलक लगाते हैं। एक साथ बैठ कर गुरु के।

तो यह हमें, तिलक कितना महत्वपूर्ण है, आप सोच सकते हैं। और तिलक कौन सा होता है? गंगा के तट पर जो रज है, उसी को इकट्ठा किया, तिलक। तो तिलक कौन से रंग का होगा हमेशा? काले रंग का ही होगा। **अगर सत् परम्परा से हम जुड़े हैं, तो तिलक हमेशा काला होगा।**

गुरुदेव के साथ तिलक लगाने का नियमित हम रोज़ करते हैं, और यही लीला स्मरण हमें करना है, जप इत्यादि करते हुए। कभी नवद्वीप का लीला स्मरण, और कभी ब्रज का लीला स्मरण। अयोध्या में हमारे को जाने की ज़रुरत नहीं है। हमारा अयोध्या से कोई लेना-देना नहीं है। ठीक है!

एक साथ बैठ कर तिलक करते हैं और एक साथ गायत्री मंत्र भी करते हैं। एक साथ गायत्री मंत्र। कौन-कौन सी गायत्री करते हैं? नवद्वीप की गायत्री भी और ब्रज की गायत्री। जो अभी हम गायत्री करते हैं, यही गायत्री हमारी सनातन गायत्री है। ये अपने धाम में भी करेंगे हम। तो गुरुदेव के साथ बैठ कर हम गायत्री करते हैं।

और फिर गायत्री इत्यादि करने के बाद हम एक साथ दोनों, फिर उसके बाद इकट्ठे होते हैं गुरु परम्परा के साथ, एक साथ महाप्रभु के निवास स्थान पर जाते हैं।

अब महाप्रभु का निवास स्थान कैसा है...

- बहुत विशाल है, चारों ओर से golden walls हैं।
- चारों ओर से दरवाज़े हैं। दरवाज़े कहाँ की ओर जा रहे हैं? गंगा की ओर जा रहे हैं सारे दरवाज़े। और दरवाज़ो से जो बीच का रास्ता है, दोनों ओर बकुल के पेड़ हैं।
- उसके बाद महाप्रभु के घर के बाहर, केले का, केले के पेड़ हैं..., घर के बाहर।
- रास्ते में बकुल के पेड़ हैं।
- उसके बाद, flowers के, fruits के बागान ही बागान हैं।
- उसके बाद राजपथ आता है, main road आती है।

इस रास्ते से आगे जाकर महाप्रभु के अन्य पार्षदों के घर हैं।

तो जैसे ही साधक अपने गुरु के साथ पहुँचते हैं, महाप्रभु के पुर में, घर पर, तो एकदम drowns in ecstasy. Ecstasy में आते हैं, इतना सुंदर पुर होता है।

और महाप्रभु के जो घर के south east में है, वो..., वहाँ पर रहते हैं अद्वैताचार्य, south east में। महाप्रभु का घर जो है ठीक बीच में है नवद्वीप के अंदर और south east में आते हैं अद्वैताचार्य। South east के साथ, अद्वैताचार्य के ठीक north में रहते हैं..., अद्वैताचार्य अपनी परम्परा के साथ रहते हैं, अपने पार्षदों के साथ..., अच्युतानन्द, सब अपने पार्षदों के साथ रहते हैं, अद्वैताचार्य। फिर north की side में होते हैं, नित्यानन्द प्रभु। नित्यानन्द प्रभु सनातन रूप से निवास करते हैं। और नित्यानन्द प्रभु के साथ उनके जो पार्षद हैं, वे निवास करते हैं, और हम लोग भी। हमारा रहने का भी स्थान कहाँ पर है? South east में अद्वैताचार्य, उससे north में नित्यानन्द प्रभु, वहीं पर हम लोग भी रहते हैं।

हम नित्यानन्द परिवार वाले जो हैं, नित्यानन्द परिवार के साथ, नित्यानन्द के साथ में रहेंगे। जो अद्वैताचार्य परिवार के हैं, वे अद्वैताचार्य के साथ रहते हैं। जो गदाधर पंडित के परिवार के हैं, वे उनके साथ रहते हैं। North west में रहते हैं, नवद्वीप के अन्दर, गदाधर पंडित। और north east में रहते हैं श्रीवास पंडित। सब कुछ precise है। धाम जो है science है। सब कुछ precise है, कौन कहाँ रहता है। Miscellaneous का कोई section नहीं है यहाँ पर। यहाँ misc. भी कोई है..., नहीं ! Proper परम्परा से जुड़ते हैं, तो ही हमें भगवत् प्राप्ति हो सकती है। हम जितना भी हरिनाम लेते हैं, उसका अंतिम फल यही है, कि हम सत् परम्परा से, सद्गुरु से जुड़ जाएँगे। जब हम सत् परम्परा से जुड़ेंगे उसके बाद हमें भगवत् प्राप्ति कभी भी होगी।

षड् गोस्वामी रहते हैं धाम के north side के अंदर, north side में western part में षड् गोस्वामी रहते हैं। और नरोत्तम दास ठाकुर इत्यादि इनका घर वहाँ पर है। और west के अंदर रहते हैं मुकुंद दत्त, नरहरि सरकार और मुरारी गुप्त भक्त जो हैं, ये west की ओर रहते हैं। तो इस प्रकार से एक-एक भक्त का..., चौंसठ (६४) महन्त रहते हैं, north की side में। West में northern side में, North-west में। तो यहाँ रहते हैं ६४ महन्त।

तो एक-एक व्यक्ति का..., जो ये सनातन पार्षद हैं भगवान के, उनका विस्तृत विवरण शास्त्रों में दिया गया है।

हम सबसे बुद्धिमान उसी भक्त को मानते हैं, जो शास्त्रों पर विश्वास पूर्ण रूप से रखता है। क्योंकि हर कोई बोलता है- हमारे गुरु ठीक हैं, कोई बोलता है- हमारे गुरु ठीक हैं। नहीं, पर वास्तव में गुरु कौन हैं? शास्त्र हैं। शास्त्र भगवान् की वाणी है, वह कभी नहीं बदलती। तो शास्त्र..., जब ज्ञान लुप्त हो जाता है तो भगवान् स्वयं इस ज्ञान को देने के लिए आते हैं..., या अपने पार्षदों को भेजते हैं, या किसी को empower करते हैं। किसको? वही ज्ञान को देने के लिए जो शास्त्रों में ज्ञान है। हम सब लोग बहुत भाग्यवान् हैं कि हमें वो शास्त्रों की उपलब्धि है जिसमें यह सनातन ज्ञान है, अन्यथा यह ज्ञान होना सर्वथा असंभव है।

तो ये सब गंगा के तट पर हम गुरुजी के साथ गए थे, फिर महाप्रभु के घर गए थे, महाप्रभु के साथ उठ कर, फिर से गंगा के तट पर गए। फिर वहाँ पर, गंगा के तट पर महाप्रभु का एक मंडप होता है। वहाँ पर जाकर हम महाप्रभु का massage करते हैं..., oil massage..., सिर पर अलग तेल लगता है, शरीर पर अलग। वह massage करके, उसके बाद महाप्रभु गंगा में उतरते हैं, अपने पार्षदों के साथ जलकेलि करते हैं। यह वहाँ रोज़ की नित्य लीला है। जलकेलि करने के बाद फिर महाप्रभु रज से अपना, महाप्रभु ने तिलक किया, यह वाला तिलक..., यह सनातन तिलक है। बद्ध अवस्था में सनातन वस्तु की प्राप्ति हो गई है हमें, बद्ध अवस्था में। तो यह तिलक की प्राप्ति..., तिलक करते हैं महाप्रभु और पार्षद गण फिर वापस घर पर आते हैं, श्रृंगार होता है, फिर आरती होता है, फिर प्रसादम् होता है, फिर उसके बाद भागवतम् Class वगैरह होता है। गदाधर पंडित भागवतम् की कथा करते हैं, रोज़ सुबह महाप्रभु के सामने।

तो गदाधर पंडित की कथा के बाद यह सब हो गया, इसके बाद फिर नित्यानन्द प्रभु के घर की ओर जाते हैं।

महाप्रभु के जो यहाँ ठाकुर जी हैं, वे नारायण हैं, और जो नित्यानन्द प्रभु के ठाकुर जी हैं, वे हैं बाँके बिहारी।

श्री राधा बाँके बिहारी की जय।।

तो बाँके बिहारी जी की आरती दर्शन करते हैं पहले महाप्रभु अपने सब पार्षदों के साथ..., और साथ में बैठते हैं, उसी स्थान पर जहाँ पर विग्रह होते हैं और एक साथ बैठ कर लीला कीर्तन करते हैं, नाम संकीर्तन करते हैं। वसंत लीला कीर्तन करते हैं, नित्यानन्द त्रयोदशी पर हमेशा। इस समय चालीस (४०) दिन तक वसंत लीला होती है

ब्रज के अंदर। तो वह ही..., क्योंकि महाप्रभु कीर्तन किसका करते हैं, ताकि उन्हें ब्रज का स्मरण हो। ये ही कीर्तन करते हैं, नाम संकीर्तन करते हैं।

उसके बाद नित्यानन्द प्रभु के पार्षदों ने सब मंडप सजाया हुआ होता है। फिर महाप्रभु इत्यादि सब निवेदन करते हैं नित्यानन्द प्रभु को कि, "हे निताई! आप कृप्या स्वर्ण चौंकी पर अपना आसन ग्रहण करें", फिर नित्यानन्द प्रभु का अभिषेक किया जाता है, जैसे अभी अभिषेक किया था। अभिषेक कौन करते हैं? सुदर्शन पंडित। अभिषेक के समय मंत्र पाठ कौन करते हैं? श्रीवास पंडित। सब कुछ निर्धारित है। और हम लोग क्या करते हैं? हम दर्शन करते हैं। और गौर-सुन्दर क्या करते हैं? वे भी दर्शन करते हैं। और अद्वैताचार्य क्या करते हैं? वे भी दर्शन करते हैं। कई संस्थाओं में नित्यानन्द त्रयोदशी के दिन दोनों को नहला दिया जाता है। मतलब कि अभिषेक करा दिया जाता है। गौर को भी, निताई को भी। यह अशास्त्रीय है। यह गलत है।

गौर अष्टकालीन लीला में सब बताया गया है कि क्या होता है। नित्यानन्द प्रभु का अभिषेक होता है, बाकि सब दर्शन करते हैं। और गौर पूर्णिमा पर क्या होगा? श्रीगौर सुन्दर का अभिषेक होगा, बाकि सब दर्शन करते हैं। निताई, नित्यानन्द प्रभु का अभिषेक नहीं होगा तब। अच्छा जन्माष्टमी पर क्या होता है? कई संस्थाओं में राधा कृष्ण दोनों का अभिषेक करते हैं। वो गलत है। अशास्त्रीय है। जिसका जन्म हुआ है, उसी का अभिषेक होगा। बाकि सब को तो निमंत्रण देंगे, आओ घर में आओ और देखो। निमंत्रण दिया जाता है एक दिन पहले।

अद्वैताचार्य का जब..., अभी अद्वैत सप्तमी गई थी कुछ दिन पहले, उससे एक षष्ठी में अद्वैताचार्य के घर से महाप्रभु और भक्तवृन्द को निमंत्रण दिया जाता है कि आप आएँ। अद्वैताचार्य के ठाकुर कौन हैं? श्री श्री मदन गोपाल। मदन गोपाल जी के विग्रह हैं अद्वैताचार्य जी के यहाँ। तो वहाँ उस दिन अद्वैताचार्य के आरती दर्शन करते हैं, कौन-कौन? महाप्रभु भी, निताई भी और बाकि सब। उनका अभिषेक नहीं होगा। और जब जन्माष्टमी होगी, तो राधारानी और उनके पिता-माता सब को निमंत्रण देते हैं, कौन? यशोदा-नन्द, कि आप आईए। वे आते हैं। तो राधारानी तो दर्शन कर रही हैं, उनका अभिषेक कैसे होगा? उसी प्रकार से राधाष्टमी पर भगवान् कृष्ण पार्षदों सहित जाते हैं राधारानी के घर पर। तो कृष्ण दर्शन कर रहे हैं, यह नहीं कि वे भी मंडप में चले गए हैं..., उनका भी अभिषेक..., यह गुप्त है प्रेम। राधा-कृष्ण का एक साथ अभिषेक कैसे हो जाएगा? राधाष्टमी पर राधा का, जन्माष्टमी पर कृष्ण का। एक साथ..., यह गलत है। क्योंकि सत् परम्परा से नहीं जुड़े, इसलिए सत् ज्ञान होना असंभव है।

शास्त्र को एक बारी हटाया तो आप अनेक गलतियाँ करते रहोगे। और check करने वाला भी कोई नहीं है, क्योंकि शास्त्र basis ही नहीं हैं।

तो स्वर्ण चौंकी पर अभिषेक हो रहा है और अभिषेक के समय..., गौरसुन्दर का अभिषेक नहीं हो रहा, गौरसुन्दर क्या कर रहे हैं? नृत्य कर रहे हैं। गीत गाये जा रहे हैं। वाद्य बज रहे हैं और गौरसुन्दर अपने पार्षदों के साथ उस समय नृत्य कर रहे होते हैं। उनका अभिषेक नहीं हो रहा होता। उस समय वे बैठे होते हैं, पहले आरती दर्शन करते हैं तब भी संकीर्तन होता है, पर तब बैठकर होता है। अब खड़े होकर होता है। तो अभिषेक हो रहा है, तो सब खड़े हो जाते हैं। तब बैठते नहीं हैं। तब संकीर्तन होता है।

अब यह हो गया, तो उसके बाद दासगण जो हैं नित्यानन्द प्रभु को लेकर जाते हैं, उनका श्रृंगार इत्यादि करते हैं। महाप्रभु का तो जब गौर पूर्णिमा होती है, १६ श्रृंगार किए जाते हैं। भगवान् हैं वे। हर चीज़ का सब उत्तमा, उत्तमा श्लोका, जिनकी उत्तम श्लोकों द्वारा स्तुति की जाती है। यदि सबसे सर्वोत्तम श्रृंगार नहीं होगा, तो सर्वोत्तम श्लोकों द्वारा स्तुति कैसे कर सकते हैं? तो १६ श्रृंगार किए जाते हैं महाप्रभु के। नित्यानन्द प्रभु के श्रृंगार करके वापिस उन्हें लाया जाता है और उसके बाद महाप्रभु, अद्वैताचार्य, गदाधर पंडित, श्रीवास पंडित, सारे भक्तजन अलग-अलग भेंट अर्पण करते हैं। वस्तुएँ अर्पण करते हैं। भूषण, अलंकार, मणिमय हार, ये सब भेंटें अर्पण करते हैं नित्यानन्द प्रभु को।

फिर नित्यानन्द प्रभु की आरती की जाती है। आरती कौन करते हैं? सुदर्शन पंडित। उसके बाद पुष्प वर्षण किया जाता है, आरती के बाद। तो वही कार्य हम नित्य लीला का कार्य, यहीं कर रहे थे, ताकि यह संस्कार हमारे मन में छपे।

देखिए, हमारी सब की clean chit..., जो शुद्ध अवस्था में, जीव जो है एकदम साफ़ है। उसमें कोई मल नहीं है। अमल है। क्यों अमल है...? क्योंकि भगवान् का अंश है। भगवान् अमल हैं। तो एकदम..., जैसे यह सफ़ेद चादर है, इसमें अपने आप में कोई वजूद नहीं है। अब इसमें जो drawing बना दोगे, वह सनातन रूप से बनी रहेगी। उसी प्रकार से अगर हम वैकुण्ठ जाना चाहते हैं, तो विधि भक्ति करें। विधि भक्ति के संस्कार छापें अपने ऊपर, कि मैं दास हूँ, दास हूँ, दास हूँ। संस्कार छप जाएँगे, तो अंत में क्या होगा? वैकुण्ठ की प्राप्ति हो जाएगी। यदि ब्रज जाना चाहते हैं, गोलोक जाना चाहते हैं, तो रागमार्ग करें। रागमार्ग में क्या करें? यदि सखा बनना चाहते हैं, तो सख्य भाव के संस्कार डालें। वो ग्रंथ पढ़ें, सख्य भाव के गुरु का आश्रय लें। तब हमें रूप मंजरी का मंत्र करने की कोई ज़रूरत नहीं है।

गुरु से बात याद आई कि जैसे..., हमारे एक special मंत्र होते हैं। जैसे हमारे जो मंत्र हैं, नित्यानन्द परिवार के, उसमें ललिता सखी का मंत्र है। ठीक है? जो अद्वैताचार्य के परिवार में होते हैं, उनका ललिता का मंत्र नहीं होता। उनका विशाखा सखी का मंत्र होता है। तो अगर भक्तिविनोद ठाकुर जो हैं, अगर गायत्री कर रहे हैं नवद्वीप धाम के अंदर, तो वे कौन सा मंत्र कर रहे होंगे? ललिता सखी का मंत्र कर रहे होंगे गुरुदेव के साथ। अगर गौर किशोर दास बाबाजी कर रहे हैं, तो वे कौन सा मंत्र कर रहे होंगे? विशाखा सखी का। तो दोनों अलग-अलग परिवार में हैं। अलग-अलग रहने की जगह है। तो एक परम्परा के कैसे हो सकते हैं? एक परम्परा में नहीं हैं। **परम्परा होती है सबके गुरु एक ही कार्य कर रहे हों, एक ही तिलक लगा रहे हों।** गौर किशोर दास बाबाजी का तिलक भी अलग है। संत बताते हैं कि वे अद्वैताचार्य परिवार के हैं। भक्तिविनोद ठाकुर दूसरे परिवार के हैं। हमारा उनके साथ, वे एक और परिवार में जुड़े हैं। हम दूसरे परिवार में जुड़े हैं। गौरकिशोर बाबा किसी ओर परिवार में जुड़े हैं। जगन्नाथ दास बाबा किसी और परिवार में। तो सबके अलग-अलग परिवार, अलग-अलग परम्परा हैं। एक साथ किसी की परम्परा नहीं है। हम एक साथ बैठकर गायत्री करते हैं गुरुदेव के। जो गायत्री हम जीवन भर करते हैं, वही सनातन गायत्री हम करेंगे। तो अगर कोई अद्वैताचार्य परिवार का है, तो सिद्धि के बाद वह निताई परिवार में नहीं चला जाएगा। ये चीज़ें हमें अच्छी तरह मालूम होनी चाहिए।

तो पुष्प वर्षण किया जाता है नित्यानन्द प्रभु का। फिर उसके बाद बराम्दे में जाकर, उसके बाद फिर पद्मावती, हड़ाई पंडित तीनों प्रभु को ले जाकर यथायोग्य आसन पर बिठाते हैं और बाँके बिहारी का विशेष प्रसाद निवेदित करते हैं, उन्हें अपर्ण करते हैं। किनको अपर्ण करते हैं? तीनों प्रभु को। तीनों प्रभु के बाद किसको अपर्ण किया जाता है? गदाधर पंडित को, श्रीवास पंडित को। उसके बाद गोस्वामीगण को। गोस्वामीगण बराम्दे से दर्शन करते हैं जब महाप्रभु प्रसाद पा रहे हैं। तो यह शब्द भी गलत है कि 'पंचतत्व महाप्रसादम् की जय...।' ये पंचतत्व महाप्रसाद कुछ नहीं होता। गौर महाप्रसाद होता है सिर्फ। गौर का पाते हैं गदाधर श्रीवास, और गदाधर श्रीवास का पाते हैं गोस्वामीगण। तो सर्वथा गौर प्रसाद होता है।

"गौर प्रसादी नैवेद्यं गदाधर-श्रीवासादि भक्तवृन्देभ्यो नमः।"

फिर,

"गौर प्रसादी नैवेद्यं श्रीगोस्वामी वर्गेभ्यो नमः।"

यह 'पंचतत्व प्रसादम्' कुछ नहीं होता। यह गलत है। सर्वथा गलत है।

तो सत् परम्परा से जुड़ेंगे तब हमारे को सारी सत् वस्तुओं का ज्ञान हो जाएगा, धीरे-धीरे। और जितना हमारी चित्त शुद्धि होगी, यह ज्ञान हमारे ऊपर छप जाएगा। चित्त शुद्धि की अपेक्षा है इसमें, सुनने से नहीं छपेगा। चित्त शुद्धि, हमारा हृदय साफ़ हो। साफ़ कैसे होगा? जब वहाँ के संस्कार छपेंगे, यहाँ के जाएँगे, तब साफ़ होगा। पहले यह लीला पूरी करते हैं, उसके बाद इस पर आते हैं।

तो तीनों प्रभु को प्रसाद अर्पण किया जाता है बाँके बिहारी का। बाँके बिहारी का प्रशाद अर्पण करके फिर उसके बाद बराम्दे में जाकर, फिर प्रशाद ले लिया, फिर जलपान कराया जाता है, फिर आचमन करवाया जाता है । फिर उसके बाद बराम्दे में जाकर, जो साधक दास है, हम, महाप्रभु के चरण सम्वाहन् करते हैं। इतना close relation है। यह नहीं की वे इतने दूर हैं, हम इतना दूर, दूर से देखेंगे..., प्रजा नहीं हैं, प्रेमी भक्त हैं। सांस रुक जाती है महाप्रभु के दर्शन न हो..., भक्तों की, सांस नहीं चल पाती। कोटि-कोटि प्राणों से ज़्यादा कीमती हैं महाप्रभु साधक को, एकदम नज़दीकी। जब हम..., अपने बच्चे को नहीं देखोगे तो क्या होगा, छटपटाओगे न? बेटी स्कूल से नहीं आई, स्कूल से..., रोना शुरु हो जाते है। इतने प्राण उसमें फँस जाते हैं, फँसे पड़े हैं। एक प्राण उसी की यह हालत है, तो करोड़ो प्राणों के समान प्रिय है महाप्रभु। उनका चरण सम्वाहन् करते हैं..., साधक दास, यानि की हम। यह हमें meditate करना है जप के समय। *यं यं...*

"यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः।।"

(गीता-८.६)

जो-जो भाव का स्मरण करोगे..., मैं महाप्रभु का दास हूँ, ये मेरे गुरुदेव हैं, मैंने यह तिलक धारण किया हुआ है, मैं यह वस्त्र धारण कर रहा हूँ, मेरे गुरुदेव ने यह वस्त्र धारण किए हैं, कोटि चन्द्रमा के समान सुशीतल हैं उनके चरणकमल, उनसे दिव्यकान्ति निकल रही है। महाप्रभु की कान्ति असीमित है, उससे कम कान्ति नित्यानन्द प्रभु की है, उससे कम कान्ति अद्वैताचार्य की है। तीनों की कान्ति बहुत विशाल है..., परन्तु भेद है, विशालता में भी। कृष्ण पूर्ण-पूर्णतम्-पूर्णतर है जैसे, अलग-अलग द्वारका, मथुरा, वृन्दावन में। उसी तरह कान्ति में भी भेद है। कान्ति अद्वैताचार्य की अलग है, निताई की अलग है, गौर की अलग है। तो कान्ति पर meditate करेंगे धीरे-धीरे-धीरे,

मैं यहाँ लीला में हूँ, फिर गंगा के तट पर जा रहा हूँ, गायत्री कर रहा हूँ, महाप्रभु के पुर जा रहा हूँ। इस प्रकार से स्मरण करेंगे संस्कार छपेंगे, फिर कभी भगवत् प्राप्ति होगी। हरिनाम तो चिंतामणि है, जो माँगोगे मिल जाएगा। पैसा माँगोगे पैसा मिल जाएगा, प्रतिष्ठा माँगोगे, प्रतिष्ठा मिल जाएगी, अयोध्या माँगोगे, तो वो भी मिल जाएगी, वैकुण्ठ माँगोगे तो वो भी मिल जाएगा, और गौरसुन्दर माँगोगे तो वे भी मिल जाएँगे, साथ में राधाकृष्ण माँगोगे तो वे भी मिल जाएँगे। सब मिल जाएगा। *यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्...*, जो भाव का स्मरण करोगे, जो भाव का। तो भाव की प्रधानता है। तो भाव की साधना करनी होगी।

"युगल चरण सेवि, निरन्तर एइ भावि, अनुरागी थाकिबो सदाय।
साधने भाविबो जाहा, सिद्धदेहे पाबो ताहा, *रागपथेर एइ से उपाय।।"*
(श्री श्री प्रेमभक्तिचन्द्रिका ५५ - श्रील नरोत्तम ठाकुर महाशय)

जो साधना काल में भाव का स्मरण करेंगे, वही सिद्ध देह में वहाँ प्राप्ति होगी, वही मिलना है। सब कुछ मालूम होना चाहिए, राधाकृष्ण, अष्टकालीन लीला..., सब कुछ। मेरा घर कहाँ है? जब गुरुदेव हमें सिद्ध प्रणाली देते हैं, एकादश भाव, तो हमारा घर भी बताते हैं। इस कुंज में तुम रहती हो, तुम यह कपड़े डालती हो, सब कुछ बताया जाता है।

असंख्य मूर्तियाँ हैं मंजरियों की, उसमें से गुरुदेव समष्टि गुरु के साथ connection करके, एक मूर्ति निर्धारित करते हैं, यह तुम्हारा सनातन रूप है, यहाँ तुम रहती हो, यह तुम्हारे पिता का नाम है, यह तुम्हारे माता का नाम है..., सब कुछ। उसी सिद्ध देह पर meditate करिए...

"बाह्य अन्तर इहार दुइतो साधन, बाह्य-साधकदेहे करे श्रवण कीर्तन।
मने-निज सिद्धदेह करिया भावन, *रात्रिदिने करे व्रजे कृष्णेर सेवन।।"*
(श्री श्री चैतन्य चरितामृत मध्य लीला २२.१५६-१५७)

अपने निज सिद्ध देह पर भावना करनी है। वही सिद्ध देह जो गुरु प्रदत्त होता है। गुरु सिद्ध देह देते हैं। उसके बाद, *'रात्रिदिने करे राधाकृष्ण सेवन'*। रात्रिदिन क्या करो? राधा कृष्ण का सेवा करो। राम का कुछ नहीं है इसमें, राम का काम नहीं है हमारे लिए, हमारे इष्ट नहीं हैं राम। गोपियों को नारायण जी ने क्या किया? दूर से नमस्ते..., ठीक है कृष्ण कहाँ हैं? Where is कृष्ण? बस..., their tṛṣṇā is Kṛṣṇa... जब

गोपियों का यह हाल है, तो मंजरियों का क्या हाल होता होगा? वे तो राधारानी की अभिन्न-देह अभिन्न-प्राण हैं।

तो चरण सम्वाहन् करते हैं महाप्रभु के हम। फिर उसके बाद बाकि सारी जो लीलाएँ होती हैं, अष्टकालीन लीला गौरसुन्दर की, वो नित्यवत् वैसे ही चलती हैं, उसमें भेद नहीं है, वो वैसे ही चलती हैं।

तो, संस्कार पर हम, रुके थे बीच में कहीं?

महाप्रभु की इच्छा होगी, वही-वही, वही सुनाई देगा। वही दिखाई देगा। नहीं इच्छा तो नहीं सुन सकते। बद्ध जीव क्या करे।

"एकले ईश्वर कृष्ण, आर सब भृत्य।
यारे यैछे नाचाय से तैछे करे नृत्य।।"
(श्री श्री चैतन्य चरितामृत् आदि लीला ५.१४२)

महाप्रभु जैसे नचाते हैं, वैसे ही सबको नृत्य करना पड़ता है। ब्रह्मा-शिव को भी। और आप और हम तो चीज़ ही क्या हैं।

"एकले ईश्वर कृष्ण, आर सब भृत्य।
यारे यैछे नाचाय से तैछे करे नृत्य।।"

जब हमारी दीक्षा होती है, तो हमें गुरुदेव से मंत्र प्राप्त होते हैं। ये जो मंत्र हैं, इन्हीं से ही हमारा सनातन सम्बन्ध बनता है भगवान् से और भगवान् के पार्षदों से। ये मंत्र, गुरुदेव कृपा करके हमें देते हैं। इन्हीं मंत्रों से ही हमारा connection..., हर मंत्र के देवता होते हैं। हमें कृष्ण प्राप्ति करनी है, तो कौन से मंत्र चाहिए? कृष्ण मंत्र, कृष्ण गायत्री। राधा प्राप्ति करनी है, तो राधा मंत्र, राधा गायत्री। हमें ब्रज के कौन से मंत्र मिलते हैं? गुरु मंजरी का मंत्र, गुरु मंजरी की गायत्री..., उनको प्राप्ति के लिए। फिर रूप मंजरी का मंत्र, रूप मंजरी की गायत्री। ललिता सखी का मंत्र। जिनसे हमारा सनातन संबध है, उनके मंत्र और गायत्री मिलती है हमारे को। यह मंत्र का हमें स्मरण करना है, इसके संस्कार अपने चित्त पर छापने हैं। और जो मंत्र हम स्मरण करते हैं, उनको बाहर निकालना है। जब हमारी दीक्षा होती है, तब हमारे को कोई पिता मंत्र नहीं मिलता, पुत्र मंत्र नहीं मिलता, पत्नी मंत्र नहीं मिलता। मिलता है कोई मंत्र, जिसका हम निरंतर जप करते हैं रोज़? मेरा बेटा, मेरा बेटा, मेरा बेटा, मेरा बेटा, मेरा शोना- शोना..., यह शोना-शोना कुछ नहीं। शोना बोना को, मोना को सबको बाहर

निकलना होगा। ये मंत्र जो हम उच्चारण करते हैं, इसको बंद करना है। ये मंत्र का स्मरण करना है, जो गुरुदेव ने प्रदत्त किए। इनसे हमारा सनातन सम्बन्ध है। नवद्वीप के मंत्र मिलते हैं, गौरसुन्दर के, निताई सुन्दर के, अद्वैताचार्य के, गदाधर पंडित के, श्रीवास पंडित के, गुरुदेव के, ये मंत्र गायत्री, ये मंत्र गायत्री से इनके जो देवता हैं, इनसे हमारा सनातन connection है। यह समझनी है बात। क्यों मिल रहे हैं ये मंत्र? जिसकी प्राप्ति करनी है, उसके मंत्र की आवश्यकता है।

कई संस्थाओं में कोई मंत्र ही नहीं हैं, इसलिए कोई प्राप्ति भी नहीं होगी। अगर मंत्र नहीं है, तो प्राप्ति कैसे करोगे? अगर मंत्र ही नहीं है, तो निवेदन कैसे करोगे उनको कुछ? **बिना बीज मंत्र के कुछ निवेदन कर ही नहीं सकते हो।**

हरिनाम जो है, वो भी भगवान् की इच्छा से फैला। भगवान् की अनेक इच्छा हैं, उसमें से एक इच्छा से यह हरिनाम फैला। पहले कुछ भी नहीं था। तो भगवद् इच्छा से हरिनाम फैला पूरे विश्व में। और हरिनाम फैला, तो सब कुछ नहीं हो गया। भगवान् की अनेक इच्छाएँ हैं। उसमें से एक इच्छा है कि सबको मंजरी भाव की प्राप्ति हो। सब बद्ध जीवों को। तो भगवान् ने अलग-अलग व्यक्तियों को पहले से चुना हुआ है, कि यह व्यक्ति हरिनाम फैलाएगा। सही समय आने पर अपने आप हरिनाम फैला। भगवान् ने औरों को भी चुना हुआ है कि कौन व्यक्ति मंजरी स्वरूप फैलाएगा पूरे विश्व में। यह शक्तिशाली व्यक्तित्व विराजमान हैं, भगवदीय इच्छा से। यह भगवदीय इच्छा से कार्य होगा। कार्य हुआ है और कार्य होगा। भगवान् ने जिसका निर्धारण किया हुआ है, उन्हीं व्यक्तियों के माध्यम से फैलेगा हरिनाम, उन्हीं व्यक्तियों के माध्यम से पूरे विश्व में रागमार्ग फैलेगा। हर चीज़ का समय होता है।

यह छोटे से, थोड़े से लोग नहीं मनाएँगे वास्तव में रागमार्ग के अंदर होता हुआ नित्यानन्द त्रयोदशी। पूरा विश्व मनाएगा इसको।

यह तो आखिरी बार ऐसे हो रहा है।

हरि बोल...!

हर चीज़ का समय होता है। हर चीज़ का समय और महाप्रभु की इच्छा से ये चीज़ें पहले से ही निर्धारित हैं। यह जो हरिनाम भी फैला है, यह भी मानवीय इच्छा से नहीं फैला। यह भगवदीय इच्छा से फैला है। परन्तु सब कुछ नहीं है हरिनाम। हमारे लिए आदर के योग्य सभी व्यक्ति हैं, चाहे वो हरिनाम फैलाएँ। हमारे लिए तो चींटी भी

आदर के योग्य है। परन्तु आदर के योग्य होने का मतलब यह नहीं कि हमने उसे follow करना है। अब जैसे मधवाचार्य की परम्परा है, वो आदर के योग्य हैं। निम्बार्काचार्य..., आदर के योग्य हैं। हमने follow थोड़े न करना है मधवाचार्य को, निम्बार्काचार्य को। जब हमने सत् परम्परा को भी follow नहीं करना, respect देने के बाद, तो बाकि सब चीज़ो को तो हमें प्रणाम, respect करते हैं बस। Respect करने का यह मतलब नहीं है, कदापि follow करना। Respect तो हम सबकी करते हैं। करनी भी चाहिए।

"तृणादपि सुनीचेन तरोरिव सहिष्णुणा।
अमानिना मानदेन कीर्तनीयः सदा हरिः।।"
(श्री श्री चैतन्य चरितामृत् आदि लीला १७.३१)

सबको मान देना है। मान देना अलग है, follow करना अलग है। मान सबको दो। हाँ! अच्छे हैं। जो व्यक्ति हरिनाम लेता है, मान के योग्य है। बस खत्म! Follow करने के योग्य नहीं है जो हरिनाम लेता है। सत् परम्परा से जुड़ना ही हरिनाम लेने का मुख्य फल है। सत् परम्परा से, सद् गुरु से जुड़ना।

जब प्रकट लीला में गौर सुन्दर थे, तब गौर सुन्दर प्रत्येक रात्रि को कीर्तन करते थे। कहाँ पर? श्रीवास आंगन में। वहाँ सब का प्रवेश नहीं था। एक बार, महाप्रभु को बोला गया कि, "महाप्रभु! इस भक्त को अंदर प्रवेश करने दीजिए, यह केवल दूध पीता है।" तो महाप्रभु बोले, "दूध पीने से क्या होगा?" तो सब भक्तों का प्रवेश नहीं है, चाहे वह महाप्रभु के समय पर भी क्यों न हो, श्रीवास आंगन में। अंतरंग रसास्वादन में सबका प्रवेश नहीं है।

महाप्रभु दोपहर को कीर्तन करते हैं पूरे नवद्वीप के अन्दर। वहाँ पर सब लोग दर्शन कर सकते हैं। परन्तु सब लोग प्रवेश नहीं कर सकते..., कहाँ पर? श्रीवास आंगन में।

"बहिरंग भक्त करे नामसंकीर्तन।
अंतरंग भक्त संगे करे रसास्वादन।।"

अंतरंग रसास्वादन जो है, वो अतरंग भक्तों के साथ किया जाता है। नाम संकीर्तन पूरे विश्व के लिए है और जो अंतरंग रसास्वादन है, वह चुनिंदा भक्तों के लिए ही है।

तो अगर नाम फैल रहा है, वो भी आदरणीय है, परन्तु जो सबसे जो निजी जन हैं महाप्रभु के, सबसे जो close जन जो हैं, वे हैं, जो श्रीवास आंगन में प्रवेश कर पाते हैं। श्रीवास आंगन में..., वे सबसे करीबी जन हैं।

शास्त्र का ज्ञान सर्वोपरि है, परन्तु शास्त्र को समझने के लिए भगवदीय बुद्धि की आवश्यकता होती है, Spiritual intelligence की। वो भगवान् कहते हैं, *'ददामि बुद्धि योगम्'*, वो मैं देता हूँ। और शास्त्र को समझना ऐसे नहीं है कि शास्त्र लिए, खोले और हम पढ़े और समझ गए, ऐसे शास्त्र नहीं समझे जाते।

रघुनाथ भट्ट गोस्वामी, षड् गोस्वामी में से एक हैं, उनकों महाप्रभु ने निर्देश दिया- *भागवत पढ़िया...*, उन्हें संदेश दिया की भागवत् का जो पठन है, भक्त के संरक्षण में रहकर भागवत् का पठन करो, सीखो। षड् गोस्वामी को यह आदेश प्राप्त हुआ था। सोचिए, कि भागवत् पढ़नी है, तो किसी के under रहकर सीखना होगा, समझना होगा। ऐसे नहीं की हम ग्रंथ से केवल अपने आप पढ़ सकते हैं।

कई बार भक्त प्रश्न कर देते हैं, संतजनों से, तत्वदर्शी महापुरुषों से कि..., और भाव सही नहीं होता। तो फिर प्रश्न का उत्तर कभी नहीं मिल पाएगा। प्राकृत इन्द्रियों द्वारा, प्राकृत मन द्वारा ये वस्तुएँ ग्रहण नहीं होती है।

"अतः श्रीकृष्णनामादि न भवेद् ग्राह्यमिन्द्रियैः।
सेवोन्मुखे हि जिह्वादौ स्वयमेव स्फुरत्यदः।।"

(श्री श्री भक्तिरसामृत् सिन्धु १.२.२३४,
श्री श्री चैतन्य चरितामृत् मध्य लीला १७.१३६)

यह spiritualise जब होती है senses, तब ये शास्त्रों का गूढ़ ज्ञान हमारे हृदय में जाता है। और यह spiritualise कैसे होती हैं? कैसे प्रश्न पूछना चाहिए? यह science बताई गई है भगवद् गीता में। चौथे (४th) अध्याय का प्रसिद्ध श्लोक है, ३४th श्लोक।

"तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्वदर्शिनः।।"

(गीता-४.३४)

तद्विद्धि - यह विधि है। क्या है? *प्रणिपात्* - पहले प्रणिपात्, पहले प्रणाम करो, सेवा करो। फिर क्या करो? फिर *परिप्रश्नेन* - फिर प्रश्न करो। *उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्वदर्शिनः* - जो तत्वदर्शी महापुरुष हैं, वे तुम्हें ज्ञान दे सकते हैं। यह नहीं

बोला कि देंगें। यदि वे प्रसन्न होंगे सेवा भावना से, तो वे ज्ञान दे सकते हैं। वे जब ज्ञान देंगे कृपावश, तो वो ज्ञान हमारे प्रवेश करेगा। कई बार देखा जाता है कि कुछ लोग challenging way में सत् पुरुषों के पास चले जाते हैं। परन्तु प्रश्न कर भी लोगे तो मिलेगा कुछ नहीं। एक चीज़ मिलेगी- अपराध।

महाप्रभु ने जो मंजरी भाव आस्वादन दिया है यह इतना गुह्य है, यह इतना secret है कि यह वेदों के भी परे है। यह जो मंजरी भाव है, वेदों के भी परे है। वेद जो हैं, वेद की ऋचाएँ है। ८८000 वेद की ऋचाएँ हैं। वेद की ऋचाओं का एक मूर्तिमान् स्वरूप है, personified रूप है। तो वेदों की जो ऋचाएँ हैं, उनको किस चीज़ की प्राप्ति होती है? कौन से भाव की प्राप्ति होती है वेदों कि ऋचाओं को? सखी भाव की, गोपीभाव की। तो जो मंजरी भाव है वेदों की ऋचाओं से भी परे है। आप समझ रहे हैं बात? यह इतना गुह्य है। तो यह गुह्य ज्ञान, यह जो मंजरी भाव जो अपने अंदर अनुकूल करेगा, साधना, और जो प्रचार करेगा इसको, वह कितना प्रिय होगा भगवान् को, सोचिए।

गीता में बताया गया है-

"य इमं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति।
भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः।।"

(गीता-१८.६८)

य इमं परमं गुह्यं, यह जो गीता में ज्ञान दिया है भगवान् उसकी ओर निर्देषण कर रहे हैं। यह जो है न, secret ज्ञान है न गीता का, यह जो किसी को भक्तों में जो फैलाता है, वह मुझे बहुत प्रिय है। सोचो। यही बोला गया है कि, "हाँ भाई, भगवान की भक्ति करो", गीता में। पाप-पुण्य मत करो, अकर्म करो। यही बोला गया है गीता में। तो यह ही छोटी सी बात जब कोई फैला देता हैं, वह भगवान के कितने प्रिय बन जाता है।

विष्णु भक्ति का भी जो प्रचार करता है, वह भी बहुत प्रिय है। उसके बाद जो कृष्ण भक्ति का प्रचार करेगा, वह कितना प्रिय होगा? अनंत मात्रा में प्रिय होगा। और कृष्ण भक्ति में जो साख्य रस का प्रचार करेगा..., और प्रिय है, और कृष्ण भक्ति में जो वात्सल्य रस का प्रचार करेगा..., तो भगवान् को और प्रिय होगा, और कृष्ण भक्ति में जो गोपीभाव का प्रचार करेगा, follow करेगा, वह और प्रिय। और सर्वोत्तम प्रिय, सबसे secret क्या है? *य इमं परमं गुह्यं..., य इमं...,* मंजरी भाव। यह जो मंजरी भाव, सबसे

गुह्यं है। *गुह्याति गुह्यं...,* यह मंजरी भाव का जो अपने जीवन में अनुकूल करेगा और जो प्रचार करेगा, वह भगवान् को सबसे ज़्यादा प्रिय, सर्वोत्तम प्रिय है।

तो यह ही हमने अपने जीवन में अंगीकार करना है, इसी का प्रचार करना है। वैधी भक्ति का..., महाप्रभु, कृष्ण के भक्तों के लिए कोई स्थान ही नहीं है वैधी भक्ति का। हाँलाकि है हमारा वैधी, वैधी-राग साधना है, परन्तु हमें वैधी भक्ति नहीं करनी।

रूप-सनातन गोस्वामी को महाप्रभु ने पहले क्या बोला? "सारे शास्त्रों का अच्छी तरह अध्ययन करो।" महाप्रभु के सनातन पार्षद हैं। "अच्छी तरह अध्ययन करो।" अध्ययन करने के बाद क्या करो?

"प्रभु आज्ञाय कैला सब शास्त्रेर विचार।
व्रज निगूढ़ भक्ति करिला प्रचार।।"
(श्री श्री चैतन्य चरितामृत मध्य लीला १.३४)

Starting कैसे करो? मंजरी भाव से ही...। प्रचार starting किया कैसे? *व्रज निगूढ़ भक्ति करिला प्रचार...,* तो हम किसके अनुगत्य में हैं? रूप-सनातन के? रूप-सनातन ने क्या किया? निगूढ़ भक्ति का प्रचार। तो उनके followers, genuine followers जो हैं रूप-सनातन गोस्वामी के उन्हें क्या करना चाहिए? *व्रज निगूढ़ भक्ति करिला प्रचार...,* निगूढ़ भक्ति का ही प्रचार करना है।

सब कुछ है शास्त्रों में। सब कुछ गोस्वामियों ने दिया हुआ है। बस हमें आँखें देखनी हैं, उसको सही तरह पहचानने की।

तो आज नित्यानन्द प्रभु का आविर्भाव दिवस है। नित्यानन्द प्रभु वैसे ही परम कृपालु हैं और आविर्भाव दिवस पर तो परम-परम-परम-परम-परम....., कृपालु हैं। तो आज हम उनसे कृपा की याचना करें, कि वे जो चीज़ हमें देने आए हैं, उसे हम सही रूप से अंगीकार करें। और अपना जीवन भी और प्रचार के द्वारा सबका जीवन भी हम सफल बनाए। अभी हम कथा को यहीं विराम देंगें। समय काफी हो चुका है। बाँके बिहारी का प्रसाद, नित्यानन्द प्रभु का प्रसाद लेने का समय है। यदि विराम देने से पहले अगर किसी का कोई प्रश्न है तो एक-आधा प्रश्न हम ले लेंगें।

हमें जो मंत्र प्राप्त हो रहे हैं, इसको बहुत ही seriously हमने लेना है। और यह बात समझनी है कि हमारे को सनातन सम्बन्ध जो है, जिनसे है, उनके मंत्र प्राप्त हो रहे हैं। और जो भी मंत्र हम करते हैं इसके अलावा, वो सारे गलत हैं। हम दिन रात

स्मरण करते हैं, कौन से मंत्रों का? बहन मंत्र, भाई मंत्र, पिता मंत्र, पुत्र मंत्र, यह सब को छोड़ना पड़ेगा, मंत्रों का जप करना। हरिनाम करें और गायत्री मंत्र करें। बाकि मंत्रों का न स्मरण करें, न कीर्तन करें, न श्रवण करें। जिस चीज़ का श्रवण करोगे, धीरे-धीरे वह संस्कार छपेंगे हृदय में।

तन-मन-धन इत्यादि जो कुछ भी है, वो जब तक भगवान् की, गुरु की, गौरांग की सेवा में नहीं इस्तेमाल होगा, तो वो हमारे लिए poison का कार्य करेगा। Poison...! तन हमारा यदि गुरु व गौरांग की सेवा में नहीं लगेगा, तो वो poison का कार्य करेगा। Poison से क्या होता है? मृत्यु। तो तन हमारा अगर गुरु की गौरांग की सेवा में नहीं लगा, तो किसकी सेवा में लगेगा? इन्द्रियों की और मन की सेवा में। तो उससे क्या होगा? हमारी मृत्यु होगी। हमारा मन है, यह मन गुरु व गौरांग की सेवा में नहीं लगेगा, तो यह मन हमारे लिए क्या कार्य करेगा? Poison का। मन किसकी सेवा में लगेगा, मन किसका स्मरण करेगा फिर? पुत्र का, पुत्री का, पड़ोसी का, मम्मी का, पापा का, बहन का, भाई का, पत्नी का। हाँ, तो यह poison का कार्य करेगा मन। जिस क्षण यह हटा गुरु व गौरांग से, उस क्षण poison का कार्य करेगा मन, उस क्षण poison का कार्य करेगा तन, और उसी क्षण..., तन, मन और धन। धन अगर गुरु गौरांग की सेवा में नहीं लगेगा, तो वो किसका कार्य करेगा? वो भी poison का कार्य करेगा।

जिस-जिस क्षण तन-मन-धन गुरु गौरांग की सेवा में नहीं लगेंगे, वो poison का ही कार्य करेंगे। ये चीज़ें हमारे पास हैं, तन भी है, मन भी है, धन भी है, तो इसे हम सही जगह पर अगर नहीं लगाएँगे, तो यह चाकू है, यह हमारे को काट देगा, खत्म कर देगा। Poison ! पता भी नहीं चलेगा, यह slow poison है। जो कुछ है, वह भगवान् का है। तन-मन-धन भी हमारा नहीं है, हमारा भी। हमारे पास मन है न? हमारे पास है, हमारा नहीं है। मन हमारे पास है, तन हमारे पास है, धन हमारे पास है। तन-मन-धन हमारे पास है। Mobile, गाड़ी, बंगला हमारे..., मैं mobile नहीं हूँ, मैं तन नहीं हूँ, मैं मन नहीं हूँ, मैं धन नहीं हूँ। ये हमारे पास हैं। किसका है? हमारा है? नहीं, हमारा नहीं है। भगवान् का है। तेरा तुझको अर्पण। हमारे पास है, care taker हैं हम। इस मन के care taker हैं, धन के care taker हैं, तन के। तो जिस क्षण यह पिता, पुत्र, पति, यह सब फालतू के स्मरण करेगा, तो यह poison का कार्य करेगा। तन-मन-धन सब। यह हमेशा भगवान्, गुरु व गौरांग की सेवा में लगना चाहिए। तन-मन-धन और आगे? इत्यादि etc., etc..., में क्या आता है? पत्नी, यही पत्नी हमारे लिए

poison बन जाएगी, अगर वह गुरु व गौरांग की सेवा में नहीं लगी होगी तो। या हम इसे अपनी सेवा में इस्तेमाल करेंगे। यही बच्चे, यही भाई इत्यादि, जो भी चीज़े हैं या तो गुरु व गौरांग की सेवा में लगती हैं या हम अपनी इन्द्रियों की सेवा में लगाते हैं उन्हें।

तो यह देखने में बहुत sweet लगता है सब कुछ। हाँ, पर यह poison का कार्य करता है। Science है। किसी को विशेष नहीं कहा जा रहा पर science है। समझेंगे नहीं, तो क्षति पहुँचाएँगे अपने आप को हम हमेशा, निरन्तर। क्षति तो पहुँचाते ही आ रहे हैं, जन्मों-जन्मों से। अब मन्त्र प्राप्ति के बाद इसका...।

और एक और बात..., यदि हमारे को मन्त्र प्राप्त हुए हैं रूप मंजरी, ललिता सखी के, और हम स्मरण कर रहे हैं पिता मंत्र, पुत्र मंत्र का, तो सिद्धि कैसे प्राप्त होगी उस मंत्र की? हमें जो मंत्र प्राप्त हुए हैं, कृष्ण मंत्र, राधा मंत्र, उसकी सिद्धि चाहिए? कैसे मिलेगी? जब उसी का स्मरण करेंगे..., तो स्मरण तो कोई और मंत्रों का करते हैं। गायत्री तो हो गई ४० मिनट में, बाकि २३ घंटे २० मिनट हम पिता-पुत्र मंत्र करते रहते हैं। हाँ, तो फिर उसी का, *यं यं स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्...,* जिस-जिस भाव का स्मरण करोगे, पुत्र भाव का, वह ही प्राप्ति होगी फिर। पत्नी बनी मर कर गधा, तो अगले जन्म तुम भी गधे बनोगे। पुत्र बना मर कर..., हम रो रहे हैं मेरा पुत्र चला गया। अगर पुत्र बन गया बिल्ली, तो अगले जन्म में तुम्हें भी बिल्ली की प्राप्ति होगी। *यं यं स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्...*

जो भाव का स्मरण हो। जो मन्त्र मिलें है, मिल गए हैं अति कृपा पूर्वक, उन्हीं का ही स्मरण करें। और जो मंत्रों का स्मरण कर रहे हैं, उसको सर्वथा, हमेशा के लिए निकाल दें।

देखिए, जब तक base ठीक नहीं होगा, वह building खड़ी नहीं हो सकती कभी भी, अच्छी, strong। तो अब शुरु से ही समझें की क्या करना है। चित्त एकदम साफ़ है, सफ़ेद चादर सबके पास है। सब का चित्त सफ़ेद चादर है। जो अभी हमने डाले हुए हैं, पिता मंत्र, पुत्र मंत्र, वो सबको हटा देना है। जो मंत्र मिल रहे हैं, उनके इष्ट देवता, उनका स्मरण करना है।

ठीक है। आप सब लोगों का बहुत-बहुत धन्यवाद।।

श्री नित्यानन्द प्रभु की..., जय।।

नित्यानन्द प्रभु आविर्भाव तिथि महा महोत्सव की..., जय।।

नित्यानन्द त्रयोदशी की..., जय।।

आप सब की..., जय।।

गौर प्रेमानन्दे..., हरि हरि बोल।।।